



# श्री शत्रुंजय - मुक्ति सम्यग्ज्ञान अभ्यासक्रम

C/o. शाह गोविन्दजी वीरम फेक्टरी कम्पाउन्ड, मोंढा रोड, औरंगाबाद (महा.) ४३१ ००९

## सम्यग्ज्ञान प्रवेशिका

### ◆◆◆ अभ्यासक्रम जवाब पत्र ◆◆◆

ऐनरोलमेन्ट नंबर \_\_\_\_\_

शहर \_\_\_\_\_

Hindi Answersheet

Oct - 2019

विद्यार्थी का नाम \_\_\_\_\_

प्रश्न-१ रिक्त स्थान

- (१) शक्तिव / नमोत्तम
- (२) ऊमीलेज
- (३) कठोरा
- (४) लोकप्रियता
- (५) राष्ट्रद्वारा की कृपा
- (६) जुआ
- (७) अशुद्ध विद्यायोगी
- (८) इमवस्तु
- (९) प्रातिकूलता
- (१०) कुर
- (११) ब्राह्म
- (१२) ईश्वरी भवनाय
- (१३) असदृगति
- (१४) जीवध्य
- (१५) अमर्यात्र भोजनीयता
- (१६) लैमो
- (१७) सालों नंबर को मे
- (१८) चंचेट्रिय
- (१९) रस्ते-धैर
- (२०) असन

प्रश्न-२ एक ही शब्द में

- (१) अशुद्ध नामकरण
- (२) लोकप्रियता
- (३) दृष्टि नामेन्द्रियप्रभु
- (४) लोकप्रिय
- (५) श्री लोकद्वय
- (६) प्राणलिपतकी कृपा
- (७) पुरुष और मोर्जन
- (८) कुमी मे
- (९) युत्तराना वर्णप्रभु
- (१०) दृष्टि-ओरनाथ प्रभु
- (११) आमोमी की कृपा
- (१२) आश्विव
- (१३) अस्त्रा
- (१४) गुणी जीवन
- (१५) दृष्टि-रांतिना प्रभु

(५)

पुकुआ

(६)

लालक

(७)

मालूर्वी

(८)

कम

(९)

मेलुर्पं

(१०)

पालाले मे

(११)

प्रैदृप दोंगे

(१२)

प्रलोक

(१३)

प्रैदाम को

(१४)

प्रैदृप १२

(१५)

उत्त

(१६)

प्रामाले

(१७)

लहौरा

(१८)

प्रदृपली दोंको

(१९)

मंटूरा

(२०)

प्रैदृप

प्रश्न-५ संख्या में जवाब

(१) ॥ माल

(२) ४२

(३) ७२८

(४) २३

(५) ७००

(६) ९

(७) ८५००० वर्ष

(८) ५

(९) ५

(१०) ५२

प्रश्न-६ ✓ या ✗ किस पृष्ठ पर

(१) ✗ (१) १५

(२) ✓ (२) २२

(३) ✗ (३) ९

(४) ✓ (४) १९

(५) ✗ (५) १२

(६) ✓ (६) २०

(७) ✗ (७) २२

(८) ✓ (८) ११

(९) ✗ (९) ५

(१०) ✓ (१०) १८

प्रश्न-३ शब्दार्थ

- (१) उत्तरा
- (२) उत्तरी
- (३) दृष्टि
- (४) वर्तमान काल मे

प्रश्न-४ जोड़ियाँ लगाओ

- (१) १ (६) १० (७) १०
- (२) ३ (७) ५ (८) ५
- (३) ५ (८) २ (९) २
- (४) १ (९) ९ (१०) ९
- (५) ६ (१०) ७ (१०) ७

(६) ✓ (६) २०

(७) ✗ (७) २२

(८) ✓ (८) ११

(९) ✗ (९) ५

(१०) ✓ (१०) १८

$$[ \quad ] + [ \quad ] = [ \quad ]$$

प्रश्न-१ मिले हुए गुण प्रश्न-२ मिले हुए गुण प्रश्न-३ मिले हुए गुण प्रश्न-४ मिले हुए गुण प्रश्न-५ मिले हुए गुण प्रश्न-६ मिले हुए गुण प्रश्न-७ मिले हुए गुण प्रश्न-८ मिले हुए गुण

कुल गुण

रीमार्क

जांचनेवाले की सही

१. मूल्यीकरण अडान नवनी शही दग्ध संदर्भातीज़रुबनीशहीः ~ मूल्यीकरण अडान नवी पठा संदर्भातीज़रुब  
आयागा ज्ञापने संदर्भार, सुवासथा, सुवासका करवा आर्ट शास्त्राकारी आवधन ज्ञापन लगावने संदर्भार  
पुष्पीय शोभायमान लगावदानी दान क्षेत्री. आलोक-प्रतीक विष्णु आयरगाव दीव, दान-रायत शुक्त-विनय  
दानोद्धुय शोभाती. तीव्र जीवनमानसीने पाठाधर्म जी विष्णु विष्णु उत्तम क्षेत्री. सामालिक्षण्यात प्रयारगाव दी  
उनायार्थ अतीती. कर्मसु ने बाबादी अने संदर्भानी रुपास आनवीने उच्चर्याकीलसाकाग करीती  
क्षेत्री दुर्गाती ज्ञान कृपासन दीवाने आनवी साया नोक्षण्यावामनी नथा. विद्वाने आवधन उत्तमात्मा दानात्मा वगोपायदी.
२. माया पूर्णय करवाची आरंभ संभारल करवाची लगाव अज्ञानाची उद्दाहेत्वाचा ज्ञात्यावाची ते ~  
आया पूर्णय करवाची कावादादा करीने ज्ञानी दीतरवाची ज्ञात्यावाची लगीते आया पूर्णयाची दुर्लाली.
- (2) अरंभ-संभारल करवाची अमार्त्तलकी दृश्या :- जीता, भीष, क्षेत्री, विद्वाने आरंभ-संभारली - तीत्यावाची  
अमार्त्तलकी दृश्याची क्षेत्रीपायदी. (3) जीया - पुराज्ञार्दन विग्रह अज्ञानापूर्वकनी कायानी व्यागार ते शार्दूलकी दृश्या  
दा. ए. अक्षयागाचा उद्दृश्य, लेस्ट्रु - स्ट्रु विद्वाने ...
३. कोईची श्रीकृष्णासी ते ~ प्रकृतीगमन :- नागाची दाना दुर्दुली दूरवाची ... सुखापरिवारी वीर-  
विजेत्याची गवाची. कृष्णा कृष्ण परिवारी लालकी दूरवाची व्यवाची. दुर्दुल-कोतीर्ज-कोतीर्ज विद्वाने वाताव-  
वधु विवक्षुदी. आदृतावाचा इसाईने घृणावती ज्ञानी रुद्रानामा नी तंत्री क्षेत्री. वासनाना दानाती दुर्दुलावाचा  
संगामजीती. जीवा जीवासन अनेक व्यासनी नी खेळावापेती - व्यासनाना व्याकुलवीनी दीप विवाचा  
दर्शनाची. जीना समाजां कोटि क्षेत्रीहीतीनथा ... भीडान उपर ददाय कोटि न खोते पर्हित  
समाजां जीना तंत्री वनी न रहेती ... गृहजीवा दीन ज्ञानवापुरुषवन नंतरपन नापी नवन-  
वागा झंगामावना व्याची. आपागा ज्ञापने शुं व्यापुरुषां आयागा इत्यावाची गुह्यतावनावी तुंत ती?
४. दान अने राजा ते ~ दान अद्वार्गप्राप्ति कृपूर्वग ज्ञायानसे. दानवीज दर्शनार्थीनां घृष्णेशाचाची दृश्य-  
दान शीज व्यागाना जाग्रुं वावेतर व्याची. हिवाधिदेव गकावारक्ष्यामीनी ज्ञवने संवितनीपापी दान शीजचा  
दान नीभाहिता पुरामहुकरवा तीर्त्यकरभगवान दीसालेतापैसा नामामुद्देश्यादान जानेती. दानवी नामामुद्देश्यात  
दक्षुदृष्टि. राजा ते ज्ञानातुं आगमील आज्ञावाची. राजा नी हेवी पाग नमरुकारकीती. राजा ते  
संवित्तिसंपत्ति अवनी अवची. ज्यां दान अनेकां राजा ते दीपत्यां विनयजी वास स्वयंत्री व्याची ... राजा ते गृहजीवा  
सुवासन-प्रीपद्या ... दान शीजाना ज्ञानामान दानव्युगार-कुमारवाची - विजयशोः - विजयाशेषामी - उद्यानमेंगा  
आपावधारामार्ती लोकपूर्य अनेकां.
५. मीरांतिनाय पूर्णा, १२ भव : ~ माया तुभव कृष्णावस्तमां राजपुरीमां शीतेगानामेराजहुता,  
जीभमेवामां दृग्गतिवाचायया. गीभमेवामां पृष्ठादेवमीक्षमांहैष वृत्तपामां अतिलक्षणामाना विद्वान्नामां वृत्तपामां राज्यात्मकाय-  
दृश्यामां दृश्यामां दृश्यामां दृश्यामां, दृश्यामां गदापित्तिमां अपराजितामाना लगेवयया. ग्रंथामेवामां रूपवित्ति  
दृश्यामां दृश्यामां दृश्यामां दृश्यामां. दृश्यामां दृश्यामां दृश्यामां दृश्यामां दृश्यामां दृश्यामां दृश्यामां दृश्यामां

पृष्ठानामां विद्वान्नामां दृश्यामां दृश्यामां दृश्यामां दृश्यामां दृश्यामां दृश्यामां दृश्यामां